1. बरसते बादल (कविता)

सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण:

क्या गाती हो, किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी ।
प्यासी धरती देख माँगती,
हो क्या मेघों से पानी ?

प्रश्न

1. मीठे गीत कौन गाती है?

ज. मीठे गीत कोयल गाती है।

2. प्यासी धरती पांनी किससे माँगती है?

ज. प्यासी धरती पानी मेघों से मांगती है।

3. किस प्रकार बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं?

ज. बादल हमें पानी देते हैं। पानी से प्रकृति को जीवन मिलता है । चारों ओर हरियाली छा जाती है। झील, नदियाँ, तालाब आदि भर जाते हैं इस प्रकार बादल प्रकृति की शोभा बढ़ाते हैं।

www.eenadupratibha.net

कवि परिचय

कवि का नाम : श्री सुमित्रानंदन पंत

जीवन काल : 1900-1977

माता-पिता का नामः सरस्वती देवी, पं.गंगादत्त

प्रसिद्ध रचना : वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगांत, ग्राभ्या, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद तथा चिदंबरा आदि।

पुरस्कार : पद्मभूषण, ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य अकादमी, सोवयत रूस ।

विशेष : वे छायावाद के प्रमुख कवि हैं। इन्हें प्रकृति वर्णन में बेजोड कवि मानते हैं ।।

विषय प्रवेश :

वर्षा ऋतु हमेशा से सब की प्रिय ऋतु रही है। वर्षा के समय प्रकृति की सुन्दरता देखने लायक होती है। पेड-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है । इसी सौंदर्य का वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

www.eenadupratibha.net

सारांश - పాఠ్యభాగ సారాంశం

'बरसते बादल' కవి సుమిత్రానందన్ పంత్. ప్రకృతి, సౌందర్యాన్ని వర్ణించి రాయడంలో వారికి సాటి ఎవరూ లేరు. वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुंजन, युगांत, ग्राम्या, चिदंबरा మొదలైనవి వారి ప్రసిద్ధ కావ్య సంకలనాలు. కావ్యం రాయడం ఆయనకు ज्ञानपीठ (జ్ఞానపీఠ్) పురస్కారాన్ని అందించింది. ప్రస్తుత కవితలో కవి వర్ష ఋతువును అందంగా వర్ణించి, మనోహరంగా చిత్రన చేశారు.

ఝమ్-ఝమ్-ఝమ్-ఝమ్- అని శ్రావణ మేఘాలు వర్షిస్తున్నాయి. చెట్ల కొమ్మలపై ఛమ్-ఛమ్-ఛమ్- అంటూ వర్షపు చినుకులు పడుతున్నాయి. మేఘాల నుంచి (మేఘపు హృదయాల) విద్యుత్ మెరుపులు తళతళమని మెరుస్తున్నాయి. ఎండ ఉన్నా, పగలు అయినా మేఘావృతమై ఉండటం వల్ల కలిగిన చీకటిలో అందరి మనస్సుల్లో కలలు జాగృతమవుతున్నాయి.

కప్పలు బెకబెకమని అరుస్తున్నాయి. వాటి మెడ యొక్క సన్నని పొర ఝున్-ఝున్మని ధ్వనిస్తున్నాయి. నెమళ్లు మియవ్-మియమంటూ నృత్యం చేస్తున్నాయి. పీవుపీవుమంటూ చాతక పక్షులు మేఘాల వైపు చూస్తున్నాయి. జలపక్షులు ఆర్ద్రసుఖంతో ఎగురుతూ ఆక్రందన చేస్తున్నాయి. మేఘాలు గగనతలంలో గర్జన చేస్తూ ఆకాశాన్ని కమ్ముకున్నాయి.

తుంపర తుంపరగా వాన కురుస్తూ ఆ చప్పుడు ఏదో చెబుతున్నట్లు ఉంది. వాటిని తాకుతూ వెంట్రుకలు నిక్కపొడుచుకుంటున్నాయి. ధారలు ధారలుగా వర్షం భూమిపై కురుస్తోంది. మట్టిలోని అణువణువు పులకరించిపోగా, నేల నుంచి కోమలమైన మొక్కల మొలకలు చిగురిస్తున్నాయి.

నా మనసు నీటి ధారలను పట్టుకుని, ఊయలూగుతోంది. రండి! అందరు నన్ను చుట్టుముట్టి శ్రావణ గీతాలను పాడండి. ఇంద్రధనస్సు ఊయలలో మనమంతా కలసి ఊగుదాం. మరల మరలా మన జీవితంలోకి ఇలాంటి మనోహరమైన శ్రావణం రావాలని కోరుకుందాం.

www.eenadupratibha.net

पाठ का सारांश

कविता का शीर्षक : बरसते बादल

कवि का नाम : श्री सुमित्रानंदन पंत

विषय वस्तुः

- वर्षा ऋतु हमेशा के लिये प्रिय वस्तु रही है। वर्षा के समय प्रकृति की सुन्दरता देखने लायक होती है।
- पेड-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है।
- सावन के मेघ आकाश में झम-झम बरसते हैं। वर्षा की बूँदे छम-छम पेडों पर गिरती हैं। चम-चम बिजली चमक रही है। जिसके कारण अंधेरा होने पर भी उजाला है।
- दादुर टर-टर करते रहते हैं। झिल्ली झन-झन बजती है । म्यव-म्यव करते मोर नाच दिखाते हैं। पीड-पीड करता चातक के गण मेघों की ओर देख रहे हैं।
- आर्द सुख से क्रंदन करते सोन बालक उडते हैं। बादल गगन में गर्जन करते घुमड-घुमड कर गिर रहे हैं।
- वर्षा की बूँदों से रिम झिम–रिम झिम का स्वर निकल रहा है । उन्हें छूने पर किसी भेद के बिना प्रकृति के सभी प्राणी रोमांचित हो जाते हैं।
- वर्षा धाराओं पर धाराऐं धरती पर झरती है इस कारण मिट्टी के कण-कण से तृण-तृण फूट रहे हैं।
- कवि कहता है कि वर्षा की धाराओं को पकडने से उनका मन झूलता है।
- कवि सबको संबोधित करके कहते है कि उन्हें घेर लें और सावन के गीत गा लें।
- इन्द्र-धनुष के झूलें में सब मिलकर झूलें ।
- अंत में कवि यह सावन मास जीवन में फिर-फिर आकर मन भावन करने के लिये कहते हैं।

विशेषताः-

बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना, सौन्दर्य बोध कराना कवि का उद्धेश्य हैं। बच्चों में कल्याण तथा परोपकार की भावना जागृत करना ही इस कविता की मुख्य विशेषता है।

www.eenadupratibha.net

शब्दार्थ

तरु = पेड చెట్లు trees

बिजली = विद्युत విద్యుత్, power

उर = हृदय హృదయం, heart

तम = अंधेरा చీకటి, darkness

दादुर = मेंढ़क కప్పలు, frogs

चातक = पपीहा చాతక పక్షి, a kind of bird

सोनबालक = जल पक्षी జల పక్షులు, a kind of water birds

रोम = बाल వెంట్రుకలు, hair

सिहर उठना = रोमांच होना వెంట్రుకలు నిక్క పొడుచుకొనుట, horripilation

छूना = स्पर्श करना తాకుట, to touch

तृण = घास గడ్డి, grass

थर = जमीन నేల, the earth

रजकण = धूलि कण ధూళి, Dust

झूलना = पेंग लेना ఊగుట, to swing

धेरना = फैलाव చుట్టు ముట్టుట, to surround

प्रश्न-उत्तर

1. मेघ, बिजली और बूँदो का वर्णन यहाँ कैसे किया गया है?

ज॰ झम-झम, झम-झम मेघ बरसते हैं।

www.eenadupratibha.net

- चम-चम बिजली चमक रही है ।
- छम-छम बूँदें गिरती हैं।

2. प्रकृति की कौन-कौन सी चीजे मन को छू लेती हैं?

ज. प्रकृति की ये चीजे मन को छू लेती हैः बरसते बादल, बहता पानी, गिरती बूँदें, बढ़ता हुआ पौधा, खिलते हुए फूल और फैलती हुई सुगंध आदि ।

3. तृण-तृण की प्रसन्नता का क्या भाव है?

ज. मिट्टी के कण-कण से कोमल अंकुर फूट रहे हैं और वे पुलकित हो रहे हैं। यही तृण-तृण की प्रसन्नता का भाव है ।

अर्थ ग्राह्यता-प्रति क्रिया

अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. धरती की शोभा का प्रमुख कारण वर्षा है। इस पर अपने विचार बताइए ।

ज. वर्षा से पानी मिलता है। पानी न हो तो पेड-पौधे भी न होंगे । पृथ्वी पर जीवन भी न होगा । पेड व, पानी के बिना धरती की शोभा भी न होगी ।

2. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

ज. घने बादल आने से चारों ओर अँधेरा छाने लगता है। मेघ गरजने लगते है। मौसम में शीतलता आ जाती है । प्रकृति का कण-कण प्रसन्न दिखने लगता है।

आ. वाक्य उचित क्रम में लिखिए ।

1. है झम-झम बरसते झम-झम मेघ के सावन ।

ज. झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के ।

2. गगन में गर्जन घुमड़-घुमड़ गिर भरते मेघ ।

ज. घुमड-घुमड गिर मेघ गगन में भरते गर्जन ।

3. धरती पर झरती धाराएँ पर धाराओं ।

ज. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर ।

www.eenadupratibha.net

इ. नीचे दिये गये भाव की पंक्तियाँ लिखिए ।

1. **बादलों के घोर अंधकार के बीच बिजली चमक रही है और मन दिन में ही सपने देखने लगा है।**

ज. चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,
थम-थम दिन के तम में सपने जगते मन के

2. मिट्टी के कण-कण से कोमल अंकुर फूट रहे हैं।

ज. रज के कण-कण में तृण-तृण को पुलकावलि थर ।।

3. **कवि चाहता है कि जीवन में सावन बार- बार आये और सब मिलकर झूलों में झूलें ।**

ज. इन्द्रधनुष के झूले में झूलें मिल सब जन,
फिर-फिर आये जीवन में सावन मन भावन ।।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए ।

1. वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है । कैसे ?

ज. वर्षा से पानी मिलता है । बिना पानी के पृथ्वी पर जीवन असंभव है । चाहे काई भी प्राणी हो, पेड पौधे ही क्यों न हो, बिना पानी के धरती पर कुछभी नही रह पाएगा । अतः वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है।

2. वर्षा ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य पर अपने विचार लिखिए ।

ज. वर्षा के समय प्रकृति बहुत ही सुन्दर दिखायी पडती है। इस समय काले बादल गरजते है और बरसते हैं। बिजली चमकती कौंधती है । मेंढक टर्राते हैं। मोर नाचते हैं। केतकी मेहकती है। फसलें ज्यादा उगती हैं। प्रकृति मनमोहक होती है । मन पुलकित होता है।

www.eenadupratibha.net

आ. बरसते बादल कविता में प्रकृति का सुन्दर चित्रण है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

ज. पाठ का सारांश

कविता का शीर्षक : बरसते बादल

कवि का नाम : श्री सुमित्रानंदन पंत

विषय वस्तुः

- वर्षा ऋतु हमेशा के लिये प्रिय वस्तु रही है। वर्षा के समय प्रकृति की सुन्दरता देखने लायक होती है।
- पेड-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य और यहाँ तक की धरती भी खुशी से झूम उठती है।
- सावन के मेघ आकाश में झम-झम बरसते हैं। वर्षा की बूँदे छम-छम पेडों पर गिरती हैं। चम-चम बिजली चमक रही है। जिसके कारण अंधेरा होने पर भी उजाला है।
- दादुर टर-टर करते रहते हैं। झिल्ली झन-झन बजती है । म्यव-म्यव करते मोर नाच दिखाते हैं। पीड-पीड करता चातक के गण मेघों की ओर देख रहे हैं।
- आर्द सुख से क्रंदन करते सोन बालक उडते हैं। बादल गगन में गर्जन करते घुमड-घुमड कर गिर रहे हैं।
- वर्षा की बूँदों से रिम झिम–रिम झिम का स्वर निकल रहा है । उन्हें छूने पर किसी भेद के बिना प्रकृति के सभी प्राणी रोमांचित हो जाते हैं।
- वर्षा धाराओं पर धाराऐं धरती पर झरती है इस कारण मिट्टी के कण-कण से तृण-तृण फूट रहे हैं।
- कवि कहता है कि वर्षा की धाराओं को पकडने से उनका मन झूलता है।
- कवि सबको संबोधित करके कहते है कि उन्हें घेर लें और सावन के गीत गा लें।
- इन्द्र-धनुष के झूलें में सब मिलकर झूलें ।
- अंत में कवि यह सावन मास जीवन में फिर-फिर आकर मन भावन करने के लिये कहते हैं।

विशेषताः-

बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करना, सौन्दर्य बोध कराना कवि का उद्धेश्य हैं। बच्चों में कल्याण तथा परोपकार की भावना जागृत करना ही इस कविता की मुख्य विशेषता है।

www.eenadupratibha.net

इ. प्रकृति सौन्दर्य पर एक छोटी सी कविता लिखिए ।

ज. निर्देश: छात्र स्वयं करें।

उदाहरण:

शशि किरणों से उत्तर -उत्तर कर
भू पर काम रूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सिका रहे थे मुसकाना ।

ई. ''फिर-फिर आये जीवन में सावन मन भावन'' ऐसा क्यों कहा गया होगा? स्पष्ट कीजिए।

ज. सावन के आने से प्रकृति का कण-कण प्रसन्न हो जाता है। प्रकृति के साथ प्रत्येक जीवन गीत गाने लगाते है । पशु-पक्षी, पेड-पौधे झूम उठते हैं। वर्षा का पानी सबके जीवन का आधार है। यह फसलों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इसलिए कवि ने ऐसा सावन को बार-बार आने के लिए कहा होगा ।

भाषा की बात

अ. कोष्टक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए ।

1. तरु, गगन, घन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए)।

तरु : पेड, वृक्ष, विटप, पादप
वाक्य प्रयोग : वर्षा में तरु झूम उठते है।

गगन : आकाश, आसमान, अंबर नभ व्योम
वाक्य प्रयोग : गगन में तारे चमकते हैं।

घन : बादल, मेघ जलद, अंबुद, वारिद
वाक्य प्रयोग : गगन में घन होते हैं ।

2. सावन, सपना, सूरज (एक एक शब्द का तत्सम रुप लिखिए)

सावन - श्रावण
सपना : स्वप्न
सूरज : सूर्य

www.eenadupratibha.net

3. गण, वारि, चन्द्र (एक एक शब्द का तद्भव रुप लिखिए।)

गण - गन

वारि - बारि

चंद्र - चाँद

4. चम-चम, तृण-तृण, फिर-फिर (पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।)

चम-चम - आकाश में तारे चम-चम चमकते हैं।

तृण-तृण - वर्षा से तृण-तृण पुलकित हो जाता है ।

फिर-फिर - हर एक के जीवन में जन्मदिन फिर-फिर से आता है।

आ. इन्हें समझिए और सूचना के अनुसार कीजिए।

1. धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर । (अंतर स्पष्ट कीजिए)

ज. धाराओं - విభక్తితో ఉన్న धारा బహువచన రూపం

धाराएँ पर— धाराओं पर నీటి ప్రవాహాల మీద

2. इन्द्रधनुष के झूले में झूले मिल सब जन । (अंतर स्पष्ट कीजिए ।)

झूले- - ఉయ్యాల (संज्ञाः)

झूले - ఊగుట (क्रिया)

3. बादल बरसते है । (रेखांकित शब्द का पद परिचय दीजिए।)

बादल - संज्ञा जातिवाचक संज्ञा, पुंलिंग, बहुवचन कर्ताकारक

बरसते हैं - क्रिया का कर्ता .

4. मन को भाने वाला (एक शब्द में लिखिए ।)

ज. मन भावन

5. पेड-पौधे, पशु-पक्षी (समास पहचानिए ।)

ज. द्वन्द्व समास

www.eenadupratibha.net

इ. रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए और इस तरह के कुछ वाक्य बनाइए ।

1. बरसते बादल अच्छे लगते हैं ।

ज. खेलते बच्चे मनभावन लगते हैं।

2. झरती धाराएँ सुन्दर लगती हैं ।

ज. पढ़ते छात्र पाठशाला की शोभा हैं ।

3. गिरती बूँदें छम छम करती हैं ।

ज. उड़ते पक्षी मनभावन लगते हैं ।

4. बहता पानी शुद्ध होता हैं ।

ज. दौडते हिरण बहुत सुन्दर लगते हैं ।

5. बढ़ता हुआ पौधा, खिलते हुए फूल, फैलती हुई सुगंध आदि अच्छे लगते हैं।

ज. रेंगते कीड़े बरसात में दिखते हैं।

ई. कविता की पंक्तियों पर ध्यान दीजिए और अलंकार समझिए ।

झम-झम-झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,
छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के ।

ज. अलंकर शब्द का अर्थ है - आभूषण । किसी बात को साधारण ढंग से न कहकर चमत्कार व सौन्दर्यपूर्ण ढंग से कहना ही अलंकार है ।

इस कविता में अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है । जब वाक्य में कोई अक्षर या शब्द बार बार प्रयोग होता है तो वहाँ वाक्य का ध्वन्यात्मक सौंदर्य बढ़ जाता है । इस प्रकार का काव्य- सौन्दर्य अनुप्रास अलंकार कहलाता है ।

www.eenadupratibha.net

Prepared by:
Bollu Ramamohan
M.A.,M.Phil. , Ph.D. in Hindi